1. 'श्रेष्ठ कर्मो का खाता बढ़ाओ तो विकर्मो का खाता समाप्त हो जायेगा।
2. बाप के संग का रंग लगाओ तो बुराईयां स्वत:समाप्त हो जायेंगी।
3. सदा खुश रहना और खुशी बांटना–यही सबसे बड़ा शान है।
4. ज्ञान, गुण और धारणा में सिन्धू बनो, स्मृति में बिन्दू बनो।
5. परीक्षा के समय प्रतिज्ञा याद आये तब प्रत्यक्षता होगी।
6. स्मृति का स्विच आन हो तो मूड ऑफ हो नहीं सकती।
7. श्रेष्ठ संकल्प का खजाना ही श्रेष्ठ प्रालब्ध वा ब्राह्मण जीवन का आधार है।
8. बुद्धि वा स्थिति यदि कमजोर है तो उसका कारण है व्यर्थ संकल्प।
9. व्यर्थ संकल्पों की निशानी है–मन उदास और खुशी गायब।
10. संकल्प व्यर्थ हैं तो दूसरे सब खजाने भी व्यर्थ हो जाते हैं।
11. संकल्पों को बचाओ तो समय, बोल सब स्वत: बच जायेंगे।
12. दिलतख्त को छोड़ साधारण संकल्प करना अर्थात् धरनी में पांव रखना।
13. दूसरे के विचारों को अपने विचारों से मिलाना–यही है रिगार्ड देना।
14. न्यारे-प्यारे होकर कर्म करने वाला ही सेकण्ड में फुलस्टॉप लगा सकता है।
15. सेकण्ड में विस्तार को सार रूप में समा लेना अर्थात् अन्तिम सर्टीफिकेट लेना।
16. वरदान की शक्ति परिस्थिति रूपी आग को भी पानी बना देती है।
17. शान्ति की शक्ति ही मन्सा सेवा का सहज साधन है। जहाँ शान्ति की शक्ति है वहाँ सन्तुष्टता है।
18. सहयोग की शक्ति असम्भव बात को भी सम्भव बना देती है। यही सेफ्टी का किला है।
19. एडॅजेस्ट होने की कला को लक्ष्य बना लो तो सहज सम्पूर्ण बन जायेंगे।
20. अपनी मन्सा वृत्ति सदा अच्छी पॉवरफुल बनाओ तो खराब भी अच्छा हो जायेगा।
21. हाँ जी कर सहयोग का हाथ बढ़ाना अर्थात् दुआओं की मालायें पहनना।
22. अशरीरी वह है जिसे शरीर की कोई भी आकर्षण अपनी तरफ आकर्षित न करे।
23. न्यारे और अधिकारी होकर कर्म में आना–यही बन्धनमुक्त स्थिति है।
24. एक बाप के प्रभाव में रहने वाले किसी भी आत्मा के प्रभाव में आ नहीं सकते।
25. माया के झमेलों से घबराने के बजाए परमात्म मेले की मौज मनाते रहो।
26. जो समय पर सहयोगी बनते हैं उन्हें एक का पदमगुणा फल मिल जाता है।
27. स्नेह रूप का अनुभव तो सुनाते हो अब शक्ति रूप का अनुभव सुनाओ।
28. आप हिम्मत का एक कदम बढ़ाओ तो बाप मदद के हजार कदम बढ़ायेंगे।
29. बालक और मालिक पन के बैलेन्स से प्लैन को प्रैक्टिकल में लाओ।

30. प्लेन बुद्धि से प्लैन को प्रैक्टिकल में लाओ तो सफलता समाई हुई है।
31. जहाँ सर्वशक्तियां साथ हैं वहाँ निर्विघ्न सफलता है ही।
32. समर्थ बोल की निशानी है–जिस बोल में आत्मिक भाव और शुभ भावना हो।
33. समय के महत्व को सामने रख सर्व प्राप्तियों का खाता फुल जमा करो।
34. हर कर्म अधिकारी पन के निश्चय और नशे से करो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी।
35. जब आप सम्पूर्णता की बधाईयां मनायेंगे तब समय, प्रकृति और माया विदाई लेगी।
36. कैसी भी धरनी तैयार करनी है तो वाणी के साथ वृत्ति से सेवा करो।
37. डबल सेवा द्वारा पावरफुल वायुमण्डल बनाओ तो प्रकृति दासी बन जायेगी।
38. पावरफुल वृत्ति द्वारा आत्माओं को योग्य और योगी बनाओ।
39. खुशखबरी सुनाकर खुशी दिलाना यही सबसे श्रेष्ठ कर्तव्य है।
40. जहाँ सर्वशक्तियां हैं वहाँ निर्विघ्न सफलता साथ है।
41. स्नेह और सहयोग के साथ शक्ति रूप बनो तो राजधानी में नम्बर आगे मिल जायेगा।
42. कैसी भी परिस्थिति हो, परिस्थिति चली जाए लेकिन खुशी नहीं जाए।
43. निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है तो श्रेष्ठ जीवन का अनुभव स्वत: होता है।
44. निश्चयबुद्धि की निशानी–निश्चित विजयी और निश्चिंत, उनके पास व्यर्थ आ नहीं सकता।
45. ऐसा स्नेह का सागर बनो जो क्रोध समीप भी न आ सके।
46. हज़ूर को बुद्धि में हाज़िर रखो तो सर्व प्राप्तियां जी हज़ूर करेंगी।
47. व्यर्थ से बेपरवाह बनो, मर्यादाओं में नहीं।
48. क्रोधी का काम है क्रोध करना और आपका काम है स्नेह देना।
49. सर्व प्रति गुणग्राहक बनो लेकिन फालो ब्रह्मा बाप को करो।
50. जिसका बाप और सेवा से प्यार है उसे परिवार का प्यार स्वत:मिलता है।
51. स्नेह ही सहज याद का साधन है इसलिए सदा स्नेही रहना और स्नेही बनाना।
52. सर्व शक्तियों से सम्पन्न रहना यही ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता है।
53. मौज का अनुभव करने के लिए माया की अधीनता को छोड़ स्वतन्त्र बनो।
54. स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध, सम्पर्क में लाइट रहना अर्थात् फरिश्ता बनना।
55. मैं पन और मेरा-पन–यही देह-अभिमान का दरवाजा है। अब इस दरवाजे को बन्द करो।
56. फरिश्ता वह है जो देह के सूक्ष्म अभिमान के सम्बन्ध से भी न्यारा है।
57. जहाँ अभिमान होता है वहाँ अपमान की फीलिंग जरूर आती है।
58. करनकरावनहार की स्मृति से भान और अभिमान को समाप्त करो।

59. ज्ञानी तू आत्मा वह है जो धोखा खाने से पहले परखकर स्वयं को बचा ले।
60. सन्तुष्टता और प्रसन्नता की विशेषता ही उड़ती कला का अनुभव कराती है।
61. संगमयुग पर श्रेष्ठ आत्मा वह है जो सदा बेफिक्र बादशाह है।
62. समय पर कोई भी साधन न हो तो भी साधना में विघ्न न पड़े।
63. सम्पूर्णता द्वारा समाप्ति के समय को समीप लाओ।
64. त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म करो तो सफलता सहज मिलती रहेगी।
65. दृढ़ता कड़े संस्कारों को भी मोम की तरह पिघला (खत्म कर) देती है।
66. बाप की दुआयें लेते हुए सदा भरपूरता का अनुभव करो।
67. सन्तुष्टमणि बनो तो प्रभु प्रिय, लोकप्रिय और स्वयंप्रिय बन जायेंगे।
68. सदा हर्षित वही रह सकते हैं जो कहीं भी आकर्षित नहीं होते हैं।
69. बापदादा के गुण गाते रहो तो स्वयं भी गुणमूर्त बन जायेंगे।
70. विश्व परिवर्तन की डेट नहीं सोचो, स्वयं के परिवर्तन की घड़ी निश्चित करो।
71. देह भान की मिट्टी के बोझ से परे रहो तो डबल लाइट फरिश्ता बन जायेंगे।
72. व्यर्थ संकल्प रूपी एकस्ट्रा भोजन नहीं करो तो मोटेपन की बीमारियों से बच जायेंगे।
73. बुद्धि की महीनता अथवा आत्मा का हल्कापन ही ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है।
74. अशरीरी पन की एक्सरसाइज और व्यर्थ संकल्प रूपी भोजन की परहेज से स्वयं को तन्दरूस्त बनाओ।
75. सर्व शक्तिमान् बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ।
76. अलंकार ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार हैं–इसलिए अलंकारी बनो देह अहंकारी नहीं।
77. रीयल डायमण्ड बनकर अपने वायब्रेशन की चमक विश्व में फैलाओ।
78. चाटे लगाने वाले का काम है चाटे लगाना आरै आपका काम है अपने को बचा लेना।
79. एक के अन्त में खो जाना अर्थात् एकान्तवासी बनना।
80. संकल्पों की एकाग्रता श्रेष्ठ परिवर्तन में फास्ट गति ले आती है।
81. पवित्रता की शमा चारों ओर जलाओ तो बाप को सहज देख सकेंगे।
82. सत्यता की विशेषता से डायमण्ड की चमक को बढ़ाओ।
83. सहारेदाता बाप को प्रत्यक्ष कर सबको सुख-शान्ति की अनुभूति कराओ।
84. मन को प्रभु की अमानत समझकर उसे सदा श्रेष्ठ कार्य में लगाओ, शुभचिंतन करो।
85. साइलेन्स की पॉवर से निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करो।
86. ब्राह्मण जीवन का सांस उमंग-उत्साह है इसलिए किसी भी परिस्थिति में उमंग-उत्साह का प्रेशर कम न हो।

87. मन को सदा मौज़ में रखना–यही जीवन जीने का कला है।
88. युक्तियुक्त वा यथार्थ सेवा का प्रत्यक्षफल है खुशी।
89. माया को देखने वा जानने के लिए त्रिकालदर्शी और त्रिनेत्री बनो तब विजयी बनेंगे।
90. नाज़ुक परिस्थितियों से घबराओ नहीं, उनसे पाठ पढ़कर स्वयं को परिपक्व बनाओ।
91. नाज़ुक परिस्थितियों के पेपर में पास होना है तो अपनी नेचर को शक्तिशाली बनाओ।
92. एडॅजेस्ट होने की शक्ति नाज़ुक समय पर पास विद आनॅर बना देगी।
93. अभी सब आधार टूटने हैं इसलिए एक बाप को अपना आधार बनाओ।
94. कोई भी बात में अपसेट होने के बजाए नॉलेजफुल की सीट पर सेट रहो।
95. किसी भी प्रकार की सेवा में सदा सन्तुष्ट रहना ही अच्छे मार्क्स लेना है।
96. ब्राह्मण वह है जो शुद्धि और विधि पूर्वक हर कार्य करे।
97. सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा की निशानी है सन्तुष्टता, सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्ट करो।
98. बुद्धि रूपी कम्प्युटर में फुलस्टॉप की मात्रा आना माना प्रसन्नचित रहना।
99. अपने प्रसन्नता की छाया से शीतलता का अनुभव कराने के लिए निर्मल और निर्मान बनो।
100. हद के नाम, मान, शान के पीछे दौड़ लगाना अर्थात् परछाई के पीछे पड़ना।
101. रूहानी शान में रहो तो कभी भी अभिमान की फीलिंग नहीं आयेगी।
102. जो अभिमान को शान समझ लेते, वह निर्मान नहीं रह सकते।
103. समय की सूचना है–समान बनो सम्पन्न बनो।
104. किसी भी विधि से व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ को इमर्ज करो।
105. जब हर संकल्प श्रेष्ठ होगा तब स्वयं का और विश्व का कल्याण होगा।
106. सुने हुए को मनन करो, मनन करने से ही शक्तिशाली बनेंगे।
107. ब्राह्मणों का श्वांस हिम्मत है, जिससे कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाता है।
108. अटेन्शन रूपी पहरेदार ठीक हैं तो अतीन्द्रिय सुख का खजाना खो नहीं सकता।
109. वरदानी बन शुभ भावना और शुभ कामना का वरदान देते रहो।
110. परमात्म प्यार में खो जाओ तो दु:खों की दुनिया भूल जायेगी।
111. सुखदाता द्वारा सुख का भण्डार प्राप्त होना–यही उनके प्यार की निशानी है।
112. अभ्यास पर पूरा-पूरा अटेन्शन दो तो फर्स्ट डिवीजन में नम्बर आ जायेगा।
113. सर्व शक्तिमान को साथी बना लो तो माया पेपर टाइगर बन जायेगी।
114. परमात्म साथ का अनुभव करो तो सब कुछ सहज अनुभव करते हुए सेफ रहेंगे।
115. ज्ञान योग से स्वयं को बलवान बना लो तो माया का फोर्स समाप्त हो जायेगा।

116. फर्स्ट डिवीजन में आने के लिए कर्मेन्द्रिय जीत, मायाजीत बनो।
117. जिन गुणों वा शक्तियों का वर्णन करते हो उनके अनुभवों में खो जाओ। अनुभव ही सबसे बड़ी अथॉरिटी है।
118. कर्म में योग का अनुभव होना अर्थात् कर्मयोगी बनना।
119. अनुभवी स्वरूप बनो तो चेहरे से खुशनसीबी की झलक दिखाई देगी।
120. योग को किनारे कर कर्म में बिजी हो जाना–यही अलबेलापन है।
121. अव्यक्त पालना के वरदान का अधिकार का अनुभव करने के लिए स्पष्टवादी बनो।
122. परमात्म प्यार की पालना का स्वरूप है–सहजयोगी जीवन।
123. एक बार की हुई गलती को बार-बार सोचना अर्थात् दाग पर दाग लगाना इसलिए बीती को बिन्दी लगाओ।
124. परिवर्तन शक्ति द्वारा व्यर्थ संकल्पों के बहाव का फोर्स समाप्त करो।
125. संगमयुग का एक-एक सेकण्ड वर्षो के समान है इसलिए अलबेलेपन में समय नहीं गंवाओ।
126. आत्मा रूपी रीयल गोल्ड में मेरापन ही अलाए है, जो वैल्यु को कम कर देता है इसलिए मेरेपन को समाप्त करो।
127. प्राप्तियों को सदा सामने रखो तो कमजोरियाँ सहज समाप्त हो जायेंगी।
128. निर्विघ्न राज्य अधिकारी बनने के लिए निर्विघ्न सेवाधारी बनो।
129. निर्मल स्वभाव निर्मानता की निशानी है। निर्मल बनो तो सफलता मिलेगी।
130. लवलीन स्थिति का अनुभव करने के लिए स्मृति-विस्मृति की युद्ध समाप्त करो।
131. यथार्थ वैराग्य वृत्ति का सहज अर्थ है–जितना न्यारा उतना प्यारा।
132. समय की समीपता का फाउन्डेशन है–बेहद की वैराग्य वृत्ति।
133. सेवा के वायुमण्डल के साथ बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ।
134. अपने पूर्वज़ स्वरूप को स्मृति में रख सर्व आत्माओं पर रहम करो।
135. व्यर्थ को फुल स्टॉप दो और शुभ भावना का स्टॉक फुल करो।
136. दृढ़ता असम्भव में भी सम्भव करा देती है।
137. सेवा से जो दुआयें मिलती हैं–वह दुआयें ही तन्दरूस्ती का आधार हैं।
138. सर्व को आत्मिक प्यार की अनुभूति कराते हुए सदा न्यारे और प्यारे बनो।
139. कारण को निवारण में परिवर्तन कर अशुभ बात को भी शुभ करके उठाओ।
140. शुभ भावना कारण को निवारण में परिवर्तन कर देती है।
141. विश्व परिवर्तक वही है जो किसी के निगेटिव को पॉजिटिव में बदल दे।
142. स्नेह के खजाने से मालामाल बन सबको स्नेह दो और स्नेह लो।
143. निरन्तर योगी बनना है तो हद के मैं और मेरेपन को बेहद में परिवर्तन करो।
144. हठ वा मेहनत करने के बजाए रमणीकता से पुरूषार्थ करो।
145. मेरेपन की अनेक हद की भावनायें एक ''मेरे बाबा'' में समा दो।

146. दृढ़ संकल्प की बेल्ट बांध लो तो सीट से अपसेट नहीं होंगे।
147. प्राप्तियों को याद करो तो दु:ख व परेशानी की बातें भूल जायेंगी।
148. बालक और मालिकपन के बैलेन्स से प्लैन को प्रैक्टिकल में लाओ।
149. दूसरों की करेक्शन करने के बजाए एक बाप से ठीक कनेक्शन रखो।
150. मान, शान और साधनों का त्याग ही महान त्याग है।
151. अपने श्रेष्ठ जीवन के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो।
152. व्यर्थ संकल्पों को एक सेकण्ड में स्टॉप करने की रिहर्सल करो तो शक्तिशाली बन जायेंगे।
153. बाप से कनेक्शन ठीक रखो तो सर्व शक्तियों की करेन्ट आती रहेगी।
154. वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को पावरफुल बनाना यही लास्ट का पुरूषार्थ व सर्विस है।
155. अपने संकल्पों को भी अर्पण कर दो तो सर्व कमजोरियां स्वत:दूर हो जायेंगी।
156. मनन करने से जो खुशी रूपी मक्खन निकलता है–वही जीवन को शक्तिशाली बनाता है।
157. स्वमान में स्थित रहो तो अनेक प्रकार के अभिमान स्वत: समाप्त हो जायेंगे।
158. मान के त्याग में सर्व के माननीय बनने का भाग्य समाया हुआ है।
159. एक बल, एक भरोसा–इस पाठ को सदा पक्का रखो तो बीच भंवर से सहज निकल जायेंगे।
160. समझदार वह हैं जो मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों सेवायें साथ-साथ करते हैं।
161. शुद्ध संकल्प का खजाना जमा हो तो व्यर्थ संकल्पों में समय नहीं जायेगा।
162. सदा एक बाप के श्रेष्ठ संग में रहो तो और किसी के संग का रंग प्रभाव नहीं डाल सकता।
163. ज्ञान का सिमरण करना ही सदा हर्षित रहने का आधार है।
164. सेवा में यदि स्वार्थ मिक्स है तो सफलता भी मिक्स हो जायेगी इसलिए नि:स्वार्थ सेवाधारी बनो।
165. बातों का पर्दा बीच में आने न दो तो बाप के साथ का अनुभव होता रहेगा।
166. आपका उच्चारण और आचरण ब्रह्मा बाप के समान हो तब कहेंगे सच्चे ब्राह्मण।
167. जहाँ ब्राह्मणों के तन-मन-धन का सहयोग है वहाँ सफलता साथ है।
168. आज्ञाकारी बच्चे ही दुआओं के पात्र हैं, दुआओं का प्रभाव दिल को सदा सन्तुष्ट रखता है।
169. जो मन से सदा सन्तुष्ट है वही डबल लाइट है।
170. कारण सुनाने के बजाए उसका निवारण करो तो दुआओं के अधिकारी बन जायेंगे।
171. साक्षीपन की स्थिति ही यथार्थ निर्णय का तख्त है।
172. सर्वंश त्यागी वह है जो पुराने स्वभाव संस्कार के वंश का भी त्याग करता है।
173. त्याग का भाग्य समाप्त करने वाला पुराना स्वभाव-संस्कार है, इसलिए इसका भी त्याग करो।
174. ''मैं त्यागी हूँ'' इस अभिमान का त्याग ही सच्चा त्याग है।
175. याद और सेवा दोनों का बैलेन्स ही डबल लॉक है।
176. सन्तुष्टता का फल प्रसन्नता है, प्रसन्नचित बनने से प्रश्न समाप्त हो जाते हैं।
177. जो सदा योगयुक्त हैं वो सहयोग का अनुभव करते विजयी बन जाते हैं।
178. सेवा में सदा जी हाज़िर करना–यही प्यार का सच्चा सबूत है।

179. स्वभाव इज़ी और पुरूषार्थ अटेन्शन वाला बनाओ।
180. साधन सेवाओं के लिए हैं, आरामपसन्द बनने के लिए नहीं।
181. साधना बीज है और साधन उसका विस्तार है। विस्तार में साधना को छिपा नहीं देना।
182. बेहद की वैराग्यवृत्ति द्वारा साधना के बीज को प्रत्यक्ष करो।
183. सेवाओं का उमंग छोटी-छोटी बीमारियों को मर्ज कर देता है।
184. बहानेबाज़ी को मर्ज करो और बेहद की वैराग्यवृत्ति को इमर्ज करो।
185. सम्बन्ध-सम्पर्क और स्थिति में लाइट बनो, दिनचर्या में नहीं।
186. सहजयोगी कहकर अलबेलापन नहीं लाओ, शक्ति रूप बनो।
187. एक दो को कॉपी करने के बजाए बाप को कॉपी करो।
188. साधनों की आकर्षण साधना को खण्डित कर देती है।
189. संकल्प में भी किसी देहधारी तरफ आकर्षित होना अर्थात् बेवफा बनना।
190. बाप की श्रेष्ठ आशाओं का दीपक जगाने वाले ही कुल दीपक हैं।
191. जो स्वयं समर्पित स्थिति में रहते हैं-सर्व का सहयोग भी उनके आगे समर्पित होता है।
192. जहाँ दिल का स्नेह है वहाँ सबका सहयोग सहज प्राप्त होता है।
193. ऐसा खुशियों की खान से सम्पन्न रहो जो आपके पास दु:ख की लहर भी न आये।
194. श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान ही श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींचने की कलम है।
195. आप इतने हल्के बन जाओ जो बाप आपको अपनी पलकों पर बिठाकर साथ ले जाए।
196. प्रसन्नता ही ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है–तो सदा प्रसन्नचित रहो।
197. कर्मभोग का वर्णन करने के बजाए, कर्मयोग की स्थिति का वर्णन करते रहो।
198. कर्मभोग का वर्णन करने के बजाए, कर्मयोग की स्थिति का वर्णन करते रहो।
199. ज्ञान धन से भरपूर रहो तो स्थूल धन की प्राप्ति स्वत: होती रहेगी।
200. किसी भी प्रकार की अर्जी डालने के बजाए सदा राज़ी रहो।
201. जब हर कर्म यथार्थ और युक्तियुक्त हो तब कहेंगे पवित्र आत्मा।
202. रूहानियत का अर्थ है–नयनों में पवित्रता की झलक और मुख पर पवित्रता की मुस्कराहट हो।
203. आत्मिक शक्ति के आधार पर सदा स्वस्थ रहने का अनुभव करो।
204. दिल की महसूसता से दिलाराम बाप की आशीर्वाद लेने के अधिकारी बनो।
205. हर परिस्थिति में राज़ी रहो तो राज़युक्त बन जायेंगे।
206. ऐसी शुभचिंतक मणी बनो जो आपकी किरणें विश्व को रोशन करती रहें।
207. मास्टर दु:ख हर्ता बन दु:ख को भी रूहानी सुख में परिवर्तन करना–यही आपका श्रेष्ठ कर्तव्य है।
208. महादानी वह है जिसके संकल्प और बोल द्वारा सबको वरदानों की प्राप्ति हो।
209. याद बल द्वारा दु:ख को सुख में और अशान्ति को शान्ति में परिवर्तन करो।
210. सच्चा तपस्वी वह है जो सदा सर्वस्व त्यागी की पोजीशन में रहता है।
211. आपोजीशन माया से करनी है दैवी परिवार से नहीं।

212. स्वउन्नति करनी है तो क्वेश्चन, करेक्शन और कोटेशन का त्याग कर अपना कनेक्शन ठीक रखो।
213. बेहद के वैरागी बनो तो आकर्षण के सब संस्कार सहज ही खत्म हो जायेंगे।
214. आप ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट हो इसलिए अलमस्त नहीं हो सकते। सर्वेन्ट माना सदा सेवा पर उपस्थित।
215. अशुद्धि ही विकार रूपी भूतों का आवाह्न करती है इसलिए संकल्पों से भी शुद्ध बनो।
216. बाप के हर फरमान पर स्वयं को कुर्बान करने वाले सच्चे परवाने बनो।
217. सिद्धि को स्वीकार कर लेना अर्थात् भविष्य प्रालब्ध को यहाँ ही समाप्त कर देना।
218. जब कहाँ भी आसक्ति न हो तब शक्ति स्वरूप प्रत्यक्ष हो।
219. स्वयं को सम्पन्न बना लो तो विशाल कार्य में स्वत: सहयोगी बन जायेंगे।
220. कर्मयोगी वही बन सकता है जो बुद्धि पर अटेन्शन का पहरा देता है।
221. सर्व को सन्तुष्ट करो तो पुरूषार्थ में स्वत:हाई जम्प लग जायेगा।
222. दिव्य बुद्धि ही साइलेन्स की शक्ति का आधार है।
223. जो सर्व शक्तियों रूपी किरणें चारों ओर फैलाते हैं वही मास्टर ज्ञान-सूर्य हैं।
224. नाम-मान-शान व साधनों का संकल्प में भी त्याग ही महान त्याग है।
225. योग्य बनना है तो कर्म और योग का बैलेन्स रखो।
226. समीप आने के लिए सोचना-बोलना और करना समान बनाओ।
227. क्यों क्या के प्रश्नों को समाप्त कर सदा प्रसन्नचित रहो।
228. माया और प्रकृति की आकर्षण से दूर रहो तो सदा हर्षित रहेंगे।
229. विकारों रूपी सांपों को सहजयोग की शैया बना दो तो सदा निश्चिंत रहेंगे।
230. हर कार्य साहस से करो तो सर्व का सम्मान प्राप्त होगा।
231. सदा हर्षित व आकर्षण मूर्त बनने के लिए सन्तुष्टमणी बनो।
232. गुण मूर्त बनकर गुणों का दान देते चलो–यही सबसे बड़ी सेवा है।
233. हर एक की विशेषता को देखते जाओ तो विशेष आत्मा बन जायेंगे।
234. दूसरों के विचारों को सम्मान दो–तो आपको सम्मान स्वत:प्राप्त होगा।
235. सर्व का स्नेह प्राप्त करना है तो मुख से सदा मीठे बोल बोलो।
236. शुद्ध संकल्पों को अपने जीवन का अनमोल खजाना बना लो तो मालामाल बन जायेंगे।
237. ईश्वरीय सेवा में स्वयं को आफर करो तो आफरीन मिलती रहेगी।
238. सर्व के प्रति शुभ चिंतन और शुभ कामना रखना ही सच्चा परोपकार है।
239. निर्भयता और नम्रता ही योगी व ज्ञानी आत्मा का स्वरूप है।
240. समय को सफल करते रहो तो समय के धोखे से बच जायेंगे।
241. खुशी को कायम रखने के लिए आत्मा रूपी दीपक में ज्ञान का घृत रोज़ डालते रहो।
242. लास्ट में फास्ट जाना है तो साधारण और व्यर्थ संकल्पों में समय नहीं गंवाओ।
243. कहना कम, करना ज्यादा–यह श्रेष्ठ लक्ष्य महान बना देगा।
244. प्रकृति का दास बनने वाले ही उदास होते हैं, इसलिए प्रकृतिजीत बनो।

245. कमल फूल समान न्यारे रहो तो प्रभू का प्यार मिलता रहेगा।
246. विश्व का नव-निर्माण करने के लिए दो शब्द याद रखो–निमित्त और निर्मान।
247. अपनी इच्छाओं को कम कर दो तो समस्यायें कम हो जायेंगी।
248. किसी की कमी, कमजोरियों का वर्णन करने के बजाए गुण स्वरूप बनो, गुणों का ही वर्णन करो।
249. अपने श्रेष्ठ भाग्य के गुण गाते रहो–कमजोरियों के नहीं।
250. फट से किसी का नुक्स निकाल देना–यह भी दु:ख देना है।
251. सदा आत्म अभिमानी रहने वाला ही सबसे बड़ा ज्ञानी है।
252. जो सदा ज्ञान का सिमरण करते हैं वे माया की आकर्षण से बच जाते हैं।
253. औरों के मन के भावों को जानने के लिए सदा मनमनाभव की स्थिति में स्थित रहो।
254. आकृति को न देखकर निराकार बाप को देखेंगे तो आकर्षण मूर्त बन जायेंगे।
255. हर बात प्रभू अर्पण कर दो तो आने वाली मुश्किलातें सहज अनुभव होंगी।
256. सोचना-बोलना और करना तीनों को एक समान बनाओ–तब कहेंगे सर्वोत्तम पुरूषार्थी।
257. प्रेम से भरपूर ऐसी गंगा बनो जो आपसे प्यार का सागर बाप दिखाई दे।
258. स्वयं की कर्मेन्द्रियों पर सम्पूर्ण राज्य करने वाले ही सच्चे राजयोगी हैं।
259. सर्व बातों में न्यारे बनो तो परमात्म बाप के सहारे का अनुभव होगा।
260. विघ्नों से घबराने के बजाए पेपर समझकर उन्हें पार करो।
261. अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करने के लिए अपने शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित रहो।
262. कोई भी बात को फील करना–यह भी फेल की निशानी है।
263. अपने को सदा प्रभू की अमानत समझकर चलो तो कर्म में रूहानियत आयेगी।
264. अपना सरल स्वभाव बना लेना–यही समाधान स्वरूप बनने की सहज विधि है।
265. संकल्पों में ऐसी दृढ़ता धारण करो जिससे सोचना और करना समान हो जाए।
266. आत्मिक दृष्टि-वृत्ति का अभ्यास करने वाले ही पवित्रता को सहज धारण कर सकते हैं।
267. मन को शक्तिशाली बनाने के लिए आत्मा को ईश्वरीय स्मृति और शक्ति का भोजन दो।
268. दृष्टि को अलौकिक, मन को शीतल, बुद्धि को रहमदिल और मुख को मधुर बनाओ।
269. ब्रह्मचर्य, योग तथा दिव्यगुणों की धारणा ही वास्तविक पुरूषार्थ है।
270. योग रूपी कवच पहनकर रखो तो माया रूपी दुश्मन का वार नहीं लगेगा।
271. समय अमूल्य खजाना है–इसलिए इसे नष्ट करने के बजाए फौरन निर्णय कर सफल करो।
272. अपने विकारी स्वभाव-संस्कार व कर्म को समर्पण कर देना ही समर्पित होना है।
273. होली हंस बन अवगुण रूपी कंकड़ को छोड़ अच्छाई रूपी मोती चुगते चलो।
274. समय और शक्ति व्यर्थ न जाए इसके लिए पहले सोचो पीछे करो।
275. मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं–यह चिंतन करना ही स्वचिंतन है।
276. अपनी वृत्ति को श्रेष्ठ बनाओ तो आपकी प्रवृत्ति स्वत:श्रेष्ठ हो जायेगी।
277. संकल्प द्वारा भी किसी को दु:ख न देना–यही सम्पूर्ण अहिंसा है।

278. हर आत्मा के प्रति सदा उपकार अर्थात् शुभ कामना रखो तो स्वत:दुआयें प्राप्त होंगी।
279. सर्व बन्धनों से मुक्त होने के लिए दैहिक नातों से नष्टोमोहा बनो।
280. हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर लो तो रीयल गोल्ड बन जायेंगे।
281. नॉलेजफुल बनो तो समस्यायें भी मनोरंजन का खेल अनुभव होंगी।
282. रूह को जब, जहाँ और जैसे चाहो स्थित कर लो–यही रूहानी ड्रिल है।
283. आपके बोल ऐसे समर्थ हों जिसमें शुभ व श्रेष्ठ भावना समाई हुई हो।
284. जैसे आवाज में आना सहज लगता है वैसे आवाज से परे जाना भी सहज हो।
285. प्रभु प्रिय, लोक प्रिय और स्वयं प्रिय बनने के लिए सन्तुष्टता का गुण धारण करो।
286. इस संसार को एक अलौकिक खेल और परिस्थितियों को खिलौना मानकर चलो तो कभी निराश नहीं होंगे।
287. सदा गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ की स्मृति रहे तो माया समीप नहीं आ सकती।
288. सर्वस्व त्यागी बनने से ही सरलता व सहनशीलता का गुण आयेगा।
289. सर्व के सहयोगी बनो तो स्नेह स्वत: प्राप्त होता रहेगा।
290. एक भी कमजोरी अनेक विशेषताओं को समाप्त कर देती है इसलिए कमजोरियों को तलाक दो।
291. एक दो के विचारों को रिगार्ड दो तो स्वयं का रिकार्ड अच्छा बन जायेगा।
292. स्वयं के परिवर्तन की घड़ी निश्चित करो तो विश्व परिवर्तन स्वत:हो जायेगा।
293. सबका आदर करने वाले ही आदर्श बन सकते हैं। सम्मान दो तब सम्मान मिलेगा।
294. परमात्म श्रीमत रूपी जल के आधार से कर्म रूपी बीज को शक्तिशाली बनाओ।
295. ज्ञान के अखुट खजानों के अधिकारी बनो तो अधीनता खत्म हो जायेगी।
296. मन से सदा के लिए ईष्या-द्वेष को विदाई दो तब विजय होगी।
297. सत्य को अपना साथी बनाओ तो आपकी नइया (नांव) कभी डूब नहीं सकती।
298. स्थूल सूक्ष्म कामनाओं का त्याग करो तब किसी भी बात का सामना कर सकेंगे।
299. सर्व सिद्धियां प्राप्त करने के लिए मन की एकाग्रता को बढ़ाओ।
300. आत्म स्थिति में स्थित होकर अनेक आत्माओं को जीयदान दो तो दुआयें मिलेंगी।
301. स्वयं निर्माण बनकर सर्व को मान देते चलो–यही सच्चा परोपकार है।
302. विश्व कल्याणकारी बनना है तो अपनी सर्व कमजोरियों को सदाकाल के लिए विदाई दो।
303. कर्म के फल की सूक्ष्म कामना रखना भी फल को पकने से पहले ही खा लेना है।
304. नम्रता और धैर्यता का गुण धारण करो तो क्रोधाग्नि भी शान्त हो जायेगी।
305. विघ्नों रूपी पत्थर को तोड़ने में समय न गंवाकर उसे हाई जम्प देकर पार करो।
306. जो बीत चुका उसको भूल जाओ, बीती बातों से शिक्षा लेकर आगे के लिए सदा सावधान रहो।
307. अब प्रयत्न का समय बीत गया, इसलिए दिल से प्रतिज्ञा कर जीवन का परिवर्तन करो।
308. श्रेष्ठ पुरूषार्थ में थकावट आना–यह भी आलस्य की निशानी है।
309. आत्मा को उज्जवल बनाने के लिए परमात्म स्मृति से मन की उलझनों को समाप्त करो।

310. सदा ईश्वरीय मर्यादाओं पर चलते रहो तो मर्यादा पुरूषोत्तम बन जायेंगे।
311. सच्चाई, सफाई को धारण करने के लिए अपने स्वभाव को सरल बनाओ।
312. एक सेकण्ड में व्यर्थ संकल्पों पर फुल स्टॉप लगा दो–यही तीव्र पुरूषार्थ है।
313. पवित्रता का व्रत सबसे श्रेष्ठ सत्यनारायण का व्रत है–इसमें ही अतीन्द्रिय सुख समाया हुआ है।
314. मान की इच्छा छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान पीछे आयेगा।
315. ''आप और बाप''दोनों ऐसा कम्बाइंड रहो जो तीसरा कोई अलग कर न सके।
316. मन-बुद्धि और संस्कारों पर सम्पूर्ण राज्य करने वाले स्वराज्य अधिकारी बनो।
317. बापदादा की छत्रछाया के नीचे रहो तो माया की छाया पड़ नहीं सकती।
318. हार्ड वर्कर के साथ-साथ अपनी स्थिति भी हार्ड (मजबूत) बनाने का लक्ष्य रखो।
319. सदा रूहानी मौज का अनुभव करते रहो तो कभी भी मूंझेंगे नहीं।
320. ब्राह्मण जीवन की विशेषता है खुशी, इसलिए खुशी का दान करते चलो।
321. ऐसा सपूत बनो जो बाबा आपके गीत गाये और आप बाबा के गीत गाओ।
322. नि:स्वार्थ और निर्विकल्प स्थिति से सेवा करने वाले ही सफलता मूर्त हैं।
323. एक बाप की कम्पन्नी में रहो और बाप को ही अपना कम्पैनियन बनाओ।
324. अपने हर्षितमुख चेहरे से सर्व प्राप्तियों की अनुभूति कराना–सच्ची सेवा है।
325. पास विद आनर बनकर पास्ट को पास करो और बाप के सदा पास रहो।
326. सदा वाह बाबा, वाह तकदीर और वाह मीठा परिवार–यही गीत गाते रहो।
327. मधुरता का गुण ही ब्राह्मण जीवन की महानता है, इसलिए मधुर बनो और मधुर बनाओ।
328. हर परिस्थिति को उड़ती कला का साधन समझकर सदा उड़ते रहो।
329. एक "बाबा"शब्द ही सर्व खजानों की चाबी है–इस चाबी को सदा सम्भालकर रखो।
330. अपनी रूहानी पर्सनैलिटी को स्मृति में रखो तो मायाजीत बन जायेंगे।
331. स्वच्छता और सत्यता में सम्पन्न बनना ही सच्ची पवित्रता है।
332. व्यर्थ बातों में समय और संकल्प गॅवाना–यह भी अपवित्रता है।
333. अशरीरी स्थिति का अनुभव व अभ्यास ही नम्बर आगे आने का आधार है।
334. अपनी चलन और चेहरे से पवित्रता की श्रेष्ठता का अनुभव कराओ।
335. अपना दैवी स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो कोई की भी व्यर्थ नज़र नहीं जा सकती।
336. वानप्रस्थ स्थिति का अनुभव करो और कराओ तो बचपन के खेल समाप्त हो जायेंगे।
337. अन्तर्मुखता से मुख को बन्द कर दो तो क्रोध समाप्त हो जायेगा।
338. स्थिति सदा खजानों से सम्पन्न और सन्तुष्ट रहे तो परिस्थितियाँ बदल जायेंगी।
339. सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर परिस्थितियों का खेल देखने वाले ही सन्तुष्टमणि हैं।
340. ज़ीरो बाप के साथ रहने वाले ही हीरो पार्टधारी हैं।
341. सत्यता की विशेषता द्वारा खुशी और शक्ति की अनुभूति करते चलो।
342. संगठन में उमंग-उत्साह और श्रेष्ठ संकल्प से सफलता हुई पड़ी है।

343. सेवा का भाग्य प्राप्त होना ही सबसे बड़ा भाग्य है।

344. अपने चेहरे को ऐसा चलता फिरता म्यूज़ियम बनाओ जिसमें बाप बिन्दु दिखाई दे।

345. अभी का प्रत्यक्षफल आत्मा को उड़ती कला का बल देता है।